

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

अमृत मोदी यूनिक्वेम पुरस्कार
2004

प्रशस्ति

डॉ राधा के. धीमान



अमृत मोदी यूनिक्वेम पुरस्कार जठरांत्ररोगविज्ञान / हृदयरोगविज्ञान / तंत्रिकाविज्ञान / मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य/ वक्ष रोगों के क्षेत्र में शोधकार्य करने वाले किसी वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है। प्रत्येक वीं बारी-बारी से वीयों का चयन किया जाता है, वीं 2004 के लिए जठरांत्ररोगविज्ञान का चयन किया जा रहा है। इसका मूल्यांकन वीय क्षेत्र में सक्रिय रूप से संबद्ध किसी शोधकर्ता द्वारा मौजूदा जानकारी में किए गए महत्वपूर्ण योगदानों पर आधारित है।

वीं 2004 का यह पुरस्कार चण्डीगढ़ स्थित स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के यकृतविज्ञान विभाग के अतिरिक्त आचार्य डॉ राधा के. धीमान को "पोर्टल अतिरक्तदाब" पर उनके शोधकार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ धीमान को पोर्टल अतिरक्तदाबजन्य पित्तविकृति (पी एच बी) के क्षेत्र में पर्याप्त अनुभव प्राप्त है और उन्होंने उसके चिकित्सा प्रबंध के लिए प्रासंगिक विकृतिजनन के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने संयुक्त एण्डोस्कोपिक वैरीसील स्कलेरोथिरेपी एवं लाइगेशन (ई एस एल) की एक नई तकनीक की व्याख्या की है। यह तकनीक वैरीसील के पुनरावर्तन को कम कर सकती है और एण्डोस्कोपिक - स्कलेरोथिरेपी (ई एस टी) अथवा एण्डोस्कोपिक वैरीसील लाइगेशन (ई वी एल) के प्रति अनुक्रिया नहीं प्रदर्शित करने वाले रोगियों में भी उपयोगी हो सकती है। डॉ धीमान के दल ने सबसे पहली बार पोर्टल अतिरक्तदाब ग्रस्त रोगियों में एण्डोस्कोपिक अल्ट्रासाउण्ड की सहायता से मलाशय की वाहिकीय रचना का अध्ययन किया और परिवर्तनों को वर्गीकृत किया है। यकृत सिरोसिस और इतर यकृत पोर्टल शिरा अवरोध ग्रस्त रोगियों में यकृत फुफ्फुस संलक्षण की व्यापकता का अध्ययन प्रथम भारतीय अध्ययन है जिसमें सिरोटिक और नॉन-सिरोटिक पोर्टल अतिरक्तदाब दोनों में इसकी व्यापकता की तुलना की गई है।

डॉ धीमान जठरांत्ररोगविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदानों के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किए गए हैं जिनमें अपोलो पुरस्कार, सिस्को पेंटेक्स व्याख्यान, ओलिम्पस मित्रा एण्डोस्कोपी पुरस्कार, हेक्स्ट ओम प्रकाश स्मारक पुरस्कार, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के डी वी दत्ता स्मारक एवं शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार सम्मिलित हैं। डॉ धीमान को 145 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

AMRUT MODY UNICHEM PRIZE

2004

CITATION

DR. RADHA K. DHIMAN



Amrut Mody Unichem Prize is awarded to a scientist for the research work carried out in the field of Gastroenterology / Cardiology / Neurology / Maternal & Child Health / Chest Diseases. The subjects are alternated each year with Gastroenterology being chosen for the year 2004. The assessment is based on the significant contributions made by a researcher to the existing knowledge in a subject area in which he / she has been actively engaged.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. Radha K. Dhiman, Additional Professor, Department of Hepatology, Postgraduate Institute of Medical Education and Research (PGIMER), Chandigarh for his research work on "Portal hypertension".

Dr. Dhiman has considerable experience in the area of Portal Hypertensive Biliopathy (PHB) and contributed significantly in studying its pathogenesis relevant to its management. He has described a new technique of combined Endoscopic Variceal Sclerotherapy and Ligation (ESL). This technique may prove to decrease the variceal recurrence and may also be useful in non-responders to Endoscopic Sclero-Therapy (EST) or Endoscopic Variceal Ligation (EVL). Dr. Dhiman's group has for the first time, studied the vascular anatomy of rectum with endoscopic ultrasound in patients with portal hypertension and classified the changes. The study on prevalence of hepatopulmonary syndrome in patients with liver cirrhosis and extra hepatic portal venous obstruction is the first Indian study that compares its prevalence both in cirrhotic and noncirrhotic portal hypertension.

Dr. Dhiman has been felicitated with many awards including the Apollo Award, Sisco Pentax Oration, Olympus Mitra Endoscopy Award, Hoechst Om Prakash Memorial Award, DV Datta Memorial and Shakuntala Amir Chand Prizes of ICMR for his significant contributions in the field of Gastroenterology. Dr. Dhiman has more than 145 research publications to his credit.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार

2005

प्रशस्ति

प्रो. एन.के. मेहरा



जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिकों द्वारा महत्वपूर्ण अनुसंधान योगदानों के लिए दिए जाने वाले परिषद के सबसे पुराने बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने वर्ष 1953 में की थी।

वर्ष 2005 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के प्रतिरोप प्रतिरक्षाविज्ञान एवं प्रतिरक्षा आनुवंशिकी विभाग के अध्यक्ष प्रो. एन.के. मेहरा को “प्रतिरक्षा आनुवंशिकी एवं प्रतिरोप प्रतिरक्षाविज्ञान” पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

प्रो. मेहरा ने नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में प्रतिरोप प्रतिरक्षाविज्ञान की विशिष्टता का मार्ग प्रशस्त किया है जिसे ‘कोर प्रयोगशाला’ के रूप में भारत में इस प्रकार की प्रथम सुविधा होने का श्रेय प्राप्त है। उनके दल ने एच एल ए विश्लेषण हेतु डी एन ए पर आधारित अनेक प्रौद्योगिकियां स्थापित की हैं जिनमें अनुक्रम आधारित टाइपिंग विधियां; प्रतिरोप संबद्ध प्रतिपिण्ड विश्लेषण हेतु अधिक दक्ष विधियां और एस टी आर / वी एन टी आर प्रोब्स एवं जीन स्कैन प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए डोनर काइमेरिज्म हेतु आमापन विधियां सम्मिलित हैं। उनके दल द्वारा पेप्टाइड प्रस्तुत करने वाले एम एच सी अणुओं की पहचान करने तथा उनके अनुक्रम का निर्धारण करने के परिणामस्वरूप माइकोबैक्टीरियम जनित संक्रामक रोगों में एम एच सी आधारित वैक्सीन/प्रतिरक्षा चिकित्सीय प्रयासों को विकसित करने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। उनके दल ने एच एल ए एलील्स और एम एच सी हैपलोटाइप्स के एक ऐसे समूह की व्याख्या की है जो एच आई वी संक्रमण को तीव्रता से बढ़ाकर रोग ग्रस्त करने में सहायक होते हैं। डॉ. मेहरा के दल ने सबसे पहली बार भारतीय आबादी में अनेक एच एल ए जीनों में व्यापक जीनोमिक विभिन्नता का प्रदर्शन किया है जो न केवल प्रतिरोपण के संदर्भ में दाता के चयन में बल्कि एच एल ए संबद्ध रोगों की व्याख्या करने और एम एच सी आधारित टीकाकरण प्रयासों की स्मररेखा तैयार करने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

प्रो. मेहरा अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किए गए हैं जिनमें एस एस भटनागर पुरस्कार, रैनबैक्सी विज्ञान फाउण्डेशन पुरस्कार, ओ.पी. भसीन विज्ञान फाउण्डेशन पुरस्कार तथा भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के जालमा न्यास निधि व्याख्यान पुरस्कार एवं शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार सम्मिलित हैं। उन्हें 345 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

BASANTI DEVI AMIR CHAND PRIZE

2005

CITATION

PROF. N.K. MEHRA



The Basanti Devi Amir Chand Prize is the earliest instituted award of ICMR, founded in 1953 by late Major General Amir Chand for the significant research contributions made by scientist in the field of biomedical sciences.

The award for the year 2005 is being presented to Prof. N.K. Mehra, Head, Dept. of Transplant Immunology and Immunogenetics, All India Institute of Medical Sciences (AIIMS), New Delhi, for his research work on "Immunogenetics and Transplant Immunology".

Professor Mehra has pioneered the specialty of Transplant Immunology at AIIMS, New Delhi which is credited to be the first such facility to have been established in India as 'Core Laboratory'. His group has established several DNA based technologies for HLA analysis including Sequence based typing methods; more efficient methods for transplant related antibody analysis and assays for donor chimerism using STR/ VNTR probes and Gene scan technologies. Identification of peptide presenting MHC molecules and their sequence determination by his group has paved the way for developing MHC based vaccine/immunotherapeutic approaches in mycobacterial infectious diseases. His group has defined a set of HLA alleles and MHC haplotypes that favor faster progression of HIV infection to disease. Dr. Mehra's group is the first to demonstrate extensive genomic diversity in several HLA genes, in the Indian population that is valuable not only in donor selection in the transplantation context but also in defining HLA associated diseases and for the design of MHC based vaccination approaches.

Professor Mehra has been felicitated with many prestigious awards including S.S. Bhatnagar Prize, Ranbaxy Science Foundation Award, O.P. Bhasin Science Foundation award and JALMA Trust Foundation Award and Shakuntala Amir Chand Prize of ICMR. He has more than 345 research publications to his credit.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार
2004

प्रशस्ति

डॉ सी.वी. अनुराधा



आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार की संस्थापना कोलकाता स्थित स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन के चिकित्साविज्ञान के पूर्व आचार्य डॉ. के. एन. सेन ने वी 1977 में की थी तथा यह पुरस्कार श्रैठ महिला वैज्ञानिकों को जैवआयुर्विज्ञान की किसी भी शाखा में उनके सराहनीय कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वी 2004 का यह पुरस्कार अन्नामलाई नगर, तमिल नाडु स्थित अन्नामलाई विश्वविद्यालय के जीवरसायनशास्त्र एवं जैवप्रौद्योगिकी विभाग की प्रो. सी.वी. अनुराधा को "टाइप 2 मधुमेह में टॉरीन की भूमिका" पर उनके कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ अनुराधा का शोधकार्य उन प्रक्रियाओं के अध्ययन पर केन्द्रित रहा है जिसके द्वारा प्लाज्मा और साइटोसॉल में बहुलता में उपस्थित एक अमीनो एसिड टॉरीन 2 अमीनो ईथिन सल्फोनिक एसिड विशैतया मधुमेह की स्थिति में एक स्वास्थ्यवर्धक कारक के रूप में कार्य करेगा। डॉ अनुराधा ने प्रदर्शित किया है कि टॉरीन टाइरोसीन फॉस्फोराइलेशन द्वारा इंसुलिन संकेतन मार्ग में समीपस्थ चरणों को सक्रिय कर सकता है और काइनिंस एवं नाइट्रिक ऑक्साइड के उत्पादन को भी सक्रिय कर सकता है जिसकी मध्यस्थता में एण्डोथीलियम पर टॉरीन के प्रभाव से रक्तदाब निम्न होता है। टॉरीन से त्वचा और टेल टेण्डन में कोलैजन का समूहन भी रूकता है, कार्बोनिल दबाव कम होता है तथा संभवतः मधुमेह संबंधी जटिलताओं को रोकने में लाभदायक हो सकता है। वस्तुतः भारत में मधुमेहज वृक्कविकृति की चिकित्सा में एक सहायक के रूप में टॉरीन की सिफारिश की जाती है और हाल में उसका प्रयोग किया जा रहा है।

डॉ अनुराधा ने शिक्षकों के लिए यू जी सी अनुसंधान पुरस्कार प्राप्त किया है। उन्होंने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय जर्नलों में 60 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित किया है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

ICMR KSHANIKA ORATION AWARD

2004

CITATION

DR. C.V. ANURADHA



The Kshanika Oration Award was instituted in 1977 by Dr. K.N. Sen, former Professor of Medicine, School of Tropical Medicine, Kolkata to be given to eminent women scientists for their meritorious work carried out in any of the branches of Biomedical Sciences.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. C.V. Anuradha, Prof., Dept. of Biochemistry and Biotechnology, Annamalai University, Annamalai Nagar, Tamil Nadu for her work on "Role of taurine in type 2 diabetes".

Dr. Anuradha's research interest has been focused on studying the mechanisms by which taurine-2-amino-ethene-sulphonic acid, one of the most abundant amino acids in the plasma and cytosol, would act as health-promoting agent particularly in diabetic state. Extensive studies carried out by Dr. Anuradha have shown that taurine could activate the proximal steps in insulin signaling pathway by increasing tyrosine phosphorylation and also activate kinins and nitric oxide production which mediate taurine's effect on endothelium to lower blood pressure. Taurine also prevents accumulation of collagen in skin and tail tendon, lowers carbonyl stress and possibly could be of benefit in preventing diabetic complications. In fact taurine is recommended and recently being used as an adjunct in the treatment of diabetic nephropathy in India.

Dr. Anuradha has received UGC Research Award for teachers. She has more than 60 publications in various international and national journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार

2004

प्रशस्ति

डॉ अल्लादि मोहन



जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए युवा वैज्ञानिकों को प्रदान किए जाने वाले शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना वीं 1953 में स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने अपनी पुत्री की स्मृति में की थी। यह पुरस्कार चिकित्सीय अनुसंधान सहित जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में किसी भी विषय पर सर्वोत्तम प्रकाशित शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वीं 2004 का यह पुरस्कार तिरुमति स्थित श्री वेंकटेश्वर आयुर्विज्ञान संस्थान के चिकित्साविज्ञान विभाग के अतिरिक्त आचार्य डॉ अल्लादि मोहन को "ग्रेनुलोमैटस विकारों" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ मोहन ने जांच संबंधी मौलिक कार्य किया है तथा भारत में पाए जाने वाले दो महत्वपूर्ण ग्रेनुलोमैटस रोगों यथा-क्षयरोग एवं सार्काइडोसिस से ग्रस्त रोगियों से संबद्ध प्रयोगशाला, रेडियोग्राफिक और चिकित्सीय पहलुओं पर और लाक्षणिक अभिव्यक्तियों के प्रलेखन की दिशा में योगदान दिया है। सार्काइडोसिस पर उनकी प्रकाशित श्रृंखला को भारत में सबसे बड़े एवं अद्वितीय अध्ययन के रूप में मान्यता प्राप्त है। अध्ययनों से संकेत मिलता है कि भारतीय उपमहाद्वीप में सभी नृजातीय वर्ग सार्काइडोसिस से प्रभावित हैं जिनमें अधिकांश पुरुष हैं और इओसिनोफीलिया को एक कमजोर पूर्वानुमानिक चिन्हक के रूप में पाया गया है। डॉ मोहन ने सबसे पहली बार वर्णन किया है कि मिलियरी क्षयरोग ग्रस्त रोगियों का वक्ष रेडियोग्राफ सामान्य दिखाई दे सकता है, परन्तु वक्ष का हाई रेज़ोल्यूशन कंप्यूटराइज्ड टोमोग्राफिक (एच आर सी टी) स्कैन करने से मिलियरी का पता लग सकता है तथा ऐसे रोगियों में प्रारंभिक अवस्था में क्षयरोग रोधी चिकित्सा की शुष्कात जीवन रक्षक साबित हो सकती है। आप्टिक विधियों (IFN आकलन) तथा एडीनोसीन डीएमीनेज़ आकलन के साथ-साथ उन्नत प्राप्त करने हेतु एण्डोस्कोपिक विधियों के विवेकपूर्ण प्रयोग के परिणामस्वरूप उदर क्षयरोग का प्रारंभिक निदान सरल बनाया जा सकता है।

डॉ मोहन ने क्षयरोग के क्षेत्र में चिकित्सीय शोधकार्य के लिए श्री मोहन लाल विग गोल्ड मेडल और डॉ ओ.ए. शर्मा एण्डावमेंट व्याख्यान पुरस्कार प्राप्त किए हैं। उन्होंने प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय जर्नलों में 75 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

SHAKUNTALA AMIR CHAND PRIZE

2004

CITATION

DR. ALLADI MOHAN



The Shakuntala Amir Chand Prize was instituted in 1953 by late Major General Amir Chand in memory of his daughter for significant research contributions by young scientists in biomedical sciences. This prize is awarded for the best published research work on any subject in the field of biomedical sciences including clinical research.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. Alladi Mohan, Additional Professor, Dept. of Medicine, Sri Venkateswara Institute of Medical Sciences, Tirupati for his work on "Granulomatous disorders".

Dr. Alladi Mohan has carried out original investigative work and contributed towards documentation of clinical manifestations as well as laboratory, radiographic and therapeutic aspects of patients with tuberculosis and sarcoidosis, the two important granulomatous diseases seen in India. His published series on Sarcoidosis is acknowledged and regarded as largest and unique study in India. The studies suggest that all ethnic groups in the Indian sub-continent are affected by sarcoidosis, most being males and eosinophilia has been reported to be a poor prognostic marker. Dr. Mohan is the first to describe that while the chest radiograph can look normal in patients with miliary tuberculosis, the High Resolution Computerized Tomographic scan (HRCT scan) of the chest can reveal the miliary and an early institution of antituberculosis treatment can be life-saving in such patients. Judicious use of endoscopic procedures to obtain tissue along with use of molecular methods (IFN- γ estimation) and adenosine deaminase estimation can facilitate early diagnosis of abdominal tuberculosis.

Dr. Mohan has been awarded Sh. Mohan Lal Wig Gold medal and Dr. O.A. Sarma endowment oration for the clinical research work conducted in the field of tuberculosis. He has more than 75 publications in reputed international and national journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार

2004

प्रशस्ति

डॉ सुकेश नारायण सिन्हा



जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए युवा वैज्ञानिकों को प्रदान किए जाने वाले शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1953 में स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने अपनी पुत्री की स्मृति में की थी। यह पुरस्कार चिकित्सीय अनुसंधान सहित जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में किसी भी विषय पर सर्वोत्तम प्रकाशित शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2004 का यह पुरस्कार अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान (भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद) के अनुसंधान अधिकारी डॉ सुकेश नारायण सिन्हा को "मलेरिया रोधी औषधियों के विकास" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ सिन्हा ने मलेरिया की चिकित्सा के लिए एक नई औषधि विकसित की है जिसका 6-मेथॉक्सी-5, 8 - बिस (4-अमीनो-1 मिथाइलब्युटाइलामीनो) क्विनोलीन (पी आई) के नाम से पेटेंट प्राप्त किया गया है। इस औषधि फार्मूले-1 की गैमीटोसाइटोसाइडल क्रियाशीलता अंतःपात्र स्थिति में वर्तमान में उपलब्ध प्राइमाक्वीन की तुलना में चार गुणा अधिक है। प्लाज्मोडियम योएली संक्रमित मूकों/हैमस्टर्स में इस औषधि का अन्तर्जीव विधि से किए गए परीक्षण से पता चला कि इस यौगिक से की गई चिकित्सा के उपरांत मूकों में संक्रामकता नहीं थी। पी. योएली संक्रमित मूकों/हैमस्टर्स पर चिकित्सा से पूर्व और पश्चात एनॉफिलीज़ स्टीफेंसाई द्वारा किए गए रक्तपान द्वारा इसका और मूल्यांकन किया गया। फार्मूला-1 के साथ की गई चिकित्सा के उपरांत मूकों में संक्रामकता पूरी तरह समाप्त पाई गई; हालांकि, चिकित्सा पूर्व मूकों पर रक्तपान किए मच्छरों में संक्रामकता की पुष्टि हुई।

उन्होंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जर्नलों में 30 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

SHAKUNTALA AMIR CHAND PRIZE

2004

CITATION

DR. SUKESH NARAYAN SINHA



The Shakuntala Amir Chand Prize was instituted in 1953 by late Major General Amir Chand in memory of his daughter for significant research contributions by young scientists in biomedical sciences. This prize is awarded for the best published research work on any subject in the field of biomedical sciences including clinical research.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. Sukesh Narayan Sinha, Research Officer, National Institute of Occupational Health (ICMR), Ahmedabad for his work on "Development of anti-malarial drugs".

Dr. Sukesh Narain Sinha has developed a new drug for treatment of malaria which has been named as 6-methoxy-5, 8-bis (4-amino-1 methylbutylamino) quinoline (PI) and has been patented. This drug formula 1 has four times more gametocytocidal activity than the present available drug action of primaquine *in vitro*. The drug when tested *in vivo* in *Plasmodium yoelli* infected mice/hamsters revealed that there was no infectivity in mice after treatment with the compound. This observation was further assessed by feeding *An. stephensi* mosquitoes on *P. yoelli* infected mice/hamsters before and after treatment. There was complete loss of infectivity in mice after treatment with formula 1; however infectivity was confirmed in the mosquitoes fed on mice before treatment.

He has more than 30 research publications in national and international journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार

2004

प्रशस्ति

श्री सतीश कुमार नटराजन



जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए युवा वैज्ञानिकों को प्रदान किए जाने वाले शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1953 में स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने अपनी पुत्री की स्मृति में की थी। यह पुरस्कार चिकित्सीय अनुसंधान सहित जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में किसी भी विषय पर सर्वोत्तम प्रकाशित शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2004 का यह पुरस्कार वेल्लोर स्थित क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज की वेलकम ट्रस्ट अनुसंधान प्रयोगशाला के जठरांत्रविज्ञान विभाग के सीनियर रिसर्च फेलो श्री सतीश कुमार नटराजन को “यकृत के सिरोसिस में विकृतिशरीरक्रियाविज्ञानी परिवर्तनों (अंतर्जीव विधि से अध्ययन)” पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

श्री नटराजन ने मर्त्यता के प्रमुख कारणों में सम्मिलित स्वतः जीवाणुज पेरीटोनाइटिस (पर्युदर्याशोथ) और यकृत संलक्षण जैसे यकृत सिरोसिस ग्रस्त रोगियों में अंतिम अवस्था की जटिलताओं पर शोध कार्य किया है। विभिन्न अवस्थाओं की तंतुमयता में आंत में ऑक्सीकर दबाव की जांच की गई जिसका उद्देश्य इस प्रक्रिया में आप्णिक प्रक्रियाओं की किसी भूमिका का पता लगाना था। श्री नटराजन के शोध कार्य से यकृत सिरोसिस में स्वतः जीवाणुज पेरीटोनाइटिस जैसी जटिलताओं के विकास में आंत्रिय ऑक्सीकर दबाव की संभावित भूमिका का संकेत मिलता है। संदमित आंत्रिय गतिशीलता के कारण आंत में जीवाणुओं की अतिवृद्धि के परिणामस्वरूप आंत से जीवाणुओं का स्थानांतरण आसान हो सकता है और एसाइटिक तरल में संक्रमण हो सकता है। ऑक्सीकर रोधी (विटामिन ई) संपूरण अथवा सोडियम टंगस्टेट (ज़ैथीन ऑक्सीडेज़ संदमक) के प्रयोग के परिणामस्वरूप ऑक्सीकर क्षति, ब्रश बॉर्डर कला में शर्करा की मात्रा में होने वाले परिवर्तन तथा उपकला कोशिकाओं के साथ जीवाणुओं के आसंजन जैसी स्थितियां रूक जाती हैं जिससे ऑक्सीकर दबाव की भूमिका की और पुष्टि होती है। अतः, यकृत सिरोसिस ग्रस्त रोगियों में ऑक्सीकर रोधियों के प्रयोग से स्वतः जीवाणुज पेरीटोनाइटिस जैसी जटिलताओं को रोकने में सहायता मिल सकती है।

श्री नटराजन ने 5 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

SHAKUNTALA AMIR CHAND PRIZE

2004

CITATION

MR. SATHISH KUMAR NATARAJAN



The Shakuntala Amir Chand Prize was instituted in 1953 by late Major General Amir Chand in memory of his daughter for significant research contributions by young scientists in biomedical sciences. This prize is awarded for the best published research work on any subject in the field of biomedical sciences including clinical research.

The award for the year 2004 is being presented to Mr. Sathish Kumar Natarajan, Senior Research Fellow, Dept. of Gastrointestinal Sciences, The Wellcome Trust Research Lab, Christian Medical College, Vellore for his work on "Pathophysiological changes in Cirrhosis of liver (*in vivo study*)".

Mr. S.K. Natarajan has worked on the end stage complications in patients with liver cirrhosis such as spontaneous bacterial peritonitis and hepatorenal syndrome which are the major cause for the mortality. Oxidative stress in the intestine was examined at different stages of fibrosis development to understand the molecular mechanisms playing a role in this process. Research work conducted by Mr. Natarajan suggests a possible role for intestinal oxidative stress in development of complications in liver cirrhosis such as spontaneous bacterial peritonitis. Intestinal bacterial overgrowth due to compromised intestinal motility may facilitate the translocation of bacteria from the gut and may favour infection of the ascitic fluid. Use of antioxidant (vitamin E) supplementation or sodium tungstate (*xanthine oxidase* inhibitor) treatment prevents oxidative damage, changes in brush border membrane sugar content as well as bacterial adherence to the epithelial cells, further confirming the role of oxidative stress. Hence the use of antioxidants in patients with liver cirrhosis may help prevent complications such as spontaneous bacterial peritonitis.

Mr. Natarajan has more than 5 research publications to his credit.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार

2004

प्रशस्ति

डॉ. डी. शंकर



जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए युवा वैज्ञानिकों को प्रदान किए जाने वाले शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1953 में स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने अपनी पुत्री की स्मृति में की थी। यह पुरस्कार चिकित्सीय अनुसंधान सहित जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में किसी भी विषय पर सर्वोत्तम प्रकाशित शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2004 का यह पुरस्कार तमिलनाडु के कांचीपुरम जिला स्थित आस्मडाई वीडू प्रौद्योगिकी संस्थान, विनायक मिशंस शोध फाउण्डेशन, डीम्ड विश्वविद्यालय के जैवप्रौद्योगिकी विभाग के व्याख्याता डॉ. डी. शंकर को "पौक कारकों के कारण अतिरक्तदाब में जीवरासायनिक परिवर्तनों" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ. शंकर ने अतिरक्तदाब रोधी चिकित्सा (निफेडिपीन कैल्शियम चैनल ब्लॉकर) प्राप्त कर रहे अतिरक्तदाब ग्रस्त रोगियों में रक्तदाब, लिपिड प्रोफाइल और रिडॉक्स की स्थिति पर खाद्य तेलों के प्रभाव का निर्धारण किया है। निफेडिपीन की चिकित्सा प्राप्त करने और तिल, सूरजमुखी अथवा मूंगफली के तेल में किसी एक तेल का सेवन करने वाले रोगियों में रक्तदाब में काफी गिरावट देखी गई। हालांकि, इन तीन प्रकार के तेलों में तिल के तेल से रक्तदाब, लिपिड प्रोफाइल और लिपिड परॉक्सीकरण पर बेहतर सुस्वा प्राप्त हुई तथा एंजाइम संबद्ध एवं एंजाइम असंबद्ध ऑक्सीकर रोधियों में वृद्धि पाई गई। इसके अतिरिक्त, मधुमेह सहित अतिरक्तदाब ग्रस्त रोगियों को तिल के तेल का सेवन कराने पर रक्तदाब, रक्त शर्करा और अन्य जीवरासायनिक एवं चिकित्सीय पैरामीटरों में महत्वपूर्ण गिरावट आती है।

डॉ. शंकर तिल के तेल पर संपन्न अपने अध्ययनों के लिए आस्ट्रेलिया स्थित अंतर्राष्ट्रीय हृदय अनुसंधान संस्था द्वारा प्रारंभिक शोधकर्ता पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं। उन्होंने वैज्ञानिक जर्नलों में 7 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित किया है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

SHAKUNTALA AMIR CHAND PRIZE

2004

CITATION

DR. D. SANKAR



The Shakuntala Amir Chand Prize was instituted in 1953 by late Major General Amir Chand in memory of his daughter for significant research contributions by young scientists in biomedical sciences. This prize is awarded for the best published research work on any subject in the field of biomedical sciences including clinical research.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. D. Sankar, Lecturer, Dept. of Biotechnology, Aarupadai Veedu Institute of Technology, Vinayaka Mission's Research Foundation, Deemed University, Kancheepuram Dist., Tamil Nadu for his work on "Biochemical alterations in hypertension due to nutritive factors".

Dr. Sankar has determined the effect of edible oils on blood pressure, lipid profiles and redox status in hypertensive patients on antihypertensive therapy (nifedipine-calcium channel blocker). Patients medicated with nifedipine and using either of the sesame, sunflower or groundnut oil had significantly lowered blood pressure. However among the three oils, sesame oil offers better protection over blood pressure, lipid profiles and lipid per oxidation and increases enzymatic and nonenzymatic antioxidants. Moreover, sesame oil when given to diabetic hypertensive patients leads to a significant fall in blood pressure, blood sugar and other biochemical and clinical parameters.

Dr. Shankar has been awarded the Early Investigator Award by the International Society for Heart Research, Australia for his work on sesame oil studies. He has published more than 7 research papers in scientific journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

बी जी आर सी रजत जयन्ती व्याख्यान पुरस्कार
2004

प्रशस्ति

डॉ के. श्रीनिवासन



इस पुरस्कार की संस्थापना भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के प्रतिरक्षासंधिर्विज्ञान संस्थान (पूर्व रक्त वर्ग संदर्भ केन्द्र) द्वारा वी 1982 में की गई थी और इसे संधिर्विज्ञान/प्रतिरक्षासंधिर्विज्ञान के क्षेत्र में शोध कार्य करने वाले किसी वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है।

वी 2004 का यह पुरस्कार मैसूर स्थित केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र के जीवरसायनशास्त्र एवं पौषण विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ के. श्रीनिवासन को "लाल रक्त कोशिका की संरचनात्मक एवं कार्यात्मक सम्पूर्णता की सुरक्षा में हाइपोलिपिडमिक आहारीय मसालों के लाभकारी प्रभावों" पर उनके शोधकार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ श्रीनिवासन द्वारा चूहा मॉडेल में किए गए अध्ययनों ने अतिकोलेस्टेरॉलरक्तता अथवा अतिट्राइग्लिसराइडरक्तता में किसी भी स्थिति के अन्तर्गत लाल रक्त कोशिकाओं की संरचनात्मक अखण्डता और तरलता की सुरक्षा के संबंध में आहारीय मसालों (हल्दी, लाल मिर्च और लहसुन) की न्यूट्रास्युटिकल संभाव्यता का प्रलेखन किया है। डॉ श्रीनिवासन द्वारा संपन्न अध्ययनों ने प्रदर्शित किया है कि किसी एथिरोजेनिक आहार द्वारा प्रेरित अतिकोलेस्टेरॉलरक्तता की स्थिति में कला के कोलेस्टेरॉल : फास्फोलिपिड के अनुपात में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के कारण लाल रक्त कोशिकाओं की संरचनात्मक अखण्डता और इस प्रकार परासरणी भंगुरता प्रभावित होती है। यह भी प्रमाणित किया गया है कि करक्युमिन, कैपसेसिन और लहसुन जैसे आहारीय अल्पकोलेस्टेरॉलरक्तता जन्य मसालों के प्रयोग से अतिकोलेस्टेरॉलरक्तता की स्थिति में लाल रक्त कोशिकाओं की इस परिवर्तित तरलता पर संरक्षी प्रभाव पड़ता है। यह कला में कोलेस्टेरॉल की मात्रा में गिरावट आने से होता है। यह जानकारी मसालों की भौजगुणविज्ञानी संभाव्यता को ज्ञात करने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण मानी जाती है।

डॉ श्रीनिवासन अपने शोधकार्य की मान्यता में डॉ पी.बी. रामाराव स्मारक पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं और उन्हें 85 से अधिक वैज्ञानिक शोध पत्रों के प्रकाशन का श्रेय प्राप्त है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH
BGRC SILVER JUBILEE ORATION AWARD
2004

CITATION

DR. K. SRINIVASAN



This award was instituted by the Institute of Immunohaematology (the former Blood Group Reference Centre) of the ICMR in 1982 and is granted to a scientist for his/her research work carried out over a period of time in the field of Haematology/ Immunohaematology.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. K. Srinivasan, Senior Scientist, Dept. of Biochemistry & Nutrition, Central Food Technology Research Centre, Mysore for his work on "Beneficial influences of hypolipidemic dietary spices in protecting the structural and functional integrity of erythrocytes".

The investigations carried out by Dr. K. Srinivasan in the rat model has documented the nutraceutical potential of dietary spices (turmeric, red pepper and garlic) with respect to the protection of structural integrity and fluidity of red blood cells under conditions of either hypercholesterolemia or hypertriglyceridemia. The studies conducted by Dr. Srinivasan have shown that in hypercholesterolemic situation induced by an atherogenic diet, the structural integrity of red blood cells and hence the osmotic fragility is affected due to a significant alteration in membrane cholesterol : phospholipid ratio. It has also been evidenced that dietary hypocholesterolemic spices such as curcumin, capsaicin and garlic offer protective influence on this altered fluidity of erythrocytes in hypercholesterolemic condition by producing a decrease in membrane cholesterol content. This information assumes importance in view of exploiting the pharmacological potential of spices.

Dr. Srinivasan has been felicitated with Dr. P.B. Ramarao Memorial Award in recognition of his work and has more than 85 scientific publications to his credit.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

डॉ कुन्ती एवं डॉ ओम प्रकाश

व्याख्यान पुरस्कार

2004

प्रशस्ति

डॉ एस.के. सरीन



इस पुरस्कार की संस्थापना सर्वश्री विपुल एवं राहुल प्रकाश द्वारा उनके माता-पिता डॉ कुन्ती और डॉ ओम प्रकाश, क्रमशः सूक्ष्मजीवविज्ञानी एवं परजीवविज्ञानी की स्मृति में वी 2005 में की गई थी। यह जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसी वैज्ञानिक को दिया जाता है और वी 2004 का पुरस्कार संक्रामक रोगों के क्षेत्र में प्रदान किया जा रहा है।

वी 2004 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित जी.बी. पन्त अस्पताल के जठरांत्ररोगविज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ एस.के. सरीन को “यकृतशोथ बी: एच बी वी उत्परिवर्तियों की आण्विक प्रोफाइल-चिकित्सा एवं निवारण हेतु नवीन प्रयास” पर उनके कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ सरीन ने विषाणुज यकृतशोथ और पोर्टल अतिरक्तदाब के विशैा संदर्भ में यकृत रोगों के विकृतिजनन और चिकित्सा प्रबंध के विभिन्न पहलुओं पर कार्य किया है। उन्होंने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है तथा वास्तव में वे इस क्षेत्र में देश के अग्रणी वैज्ञानिक हैं। उन्होंने यकृतशोथ बी उत्परिवर्तियों, जो भारत में एक बढ़ती समस्या है, के संबंध में पथ प्रदर्शक कार्य किया है। उन्होंने चिरकारी यकृतशोथ बी के इलाज के लिए ‘लामीवुडीन पल्स थिरेपी’ और ‘आनुक्रमिक चिकित्सा’ की शुष्भात की। डॉ सरीन के कार्य और समर्थन के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ‘यकृतशोथ बी विषाणु-वाहक’ के स्थान पर सुपैट शब्द ‘चिरकारी यकृतशोथ बी विषाणु संक्रमण’ का प्रयोग किया जाने लगा है। उन्होंने यकृतशोथ सी और यकृतशोथ बी एवं यकृतशोथ सी विषाणु के सह-संक्रमणों की चिकित्सा के लिए सफलतापूर्वक एक नवीन प्रोटोकॉल विकसित किया है। उन्होंने यकृतशोथ बी विषाणु टीकाकरण में मूल पहलुओं पर अपना योगदान दिया है जिनमें वैक्सीन की अनुक्रियाहीनता से निपटने तथा यकृतशोथ बी विषाणु टीकाकरण के चिकित्सीय हितों को प्रदर्शित करने हेतु वैक्सीन सहायकों का प्रयोग सम्मिलित है। पोर्टल अतिरक्तदाब, वैरीसील रक्तस्राव के प्राथमिक रोगनिरोध तथा नॉन-सिरोटिक पोर्टल तंतुमयता के क्षेत्र में उनके मौलिक योगदान का भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वागत हुआ है।

डॉ सरीन ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जर्नलों में 200 से अधिक मौलिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। उन्हें एम सी आई के रजत जयन्ती अनुसंधान पुरस्कार; लाइफ साइसेज़ में अनुसंधान एवं विकास हेतु फिक्की पुरस्कार; डॉ वी.आर. खानोलकर, नेताजी, नोल, पार्क-डेविस, बूट्स व्याख्यान पुरस्कार, रैनबैक्सी शोध विज्ञान पुरस्कार; शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार; भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के अमृत मोदी यूनिफेम एवं डी.वी. दत्ता स्मारक पुरस्कारों से सम्मानित होने का श्रेय प्राप्त है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

**DRS KUNTI & OM PRAKASH
ORATION AWARD
2004**



CITATION

DR. S.K. SARIN

This award was instituted in 2005 by Messrs Vipul and Rahul Prakash in memory of their parents, Drs. Kunti and Om Prakash, a Microbiologist and Parasitologist respectively. It is conferred on a scientist for excellence achieved in the field of Biomedical Sciences and is being offered in the field of Infectious Diseases for the year 2004.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. S.K. Sarin, Professor & Head, Dept. of Gastroenterology, G.B. Pant Hospital, New Delhi for his work on "Hepatitis B : Molecular profile of HBV mutants- Novel approaches for treatment and prevention".

Dr. S.K. Sarin has worked on various aspects of the pathogenesis and management of liver diseases with special reference to Viral Hepatitis and Portal Hypertension. He has made significant contributions and indeed is the scientific leader in the country in this field. He has done pioneering work related to hepatitis B mutants, a growing problem in India. He introduced 'Lamivudine-Pulse Therapy' and 'Sequential Therapy' for treating chronic hepatitis B. Dr. Sarin's work and advocacy has internationalized the usage of the precise term 'chronic HBV infection' instead of 'Hepatitis B Virus (HBV)-carrier'. He has successfully developed new protocols for treatment of hepatitis C and hepatitis B & C virus co-infections. He has contributed to basic issues in HBV vaccination, including use of vaccine adjuvants to overcome vaccine non-response and to show the therapeutic benefits of HBV vaccination. His original contribution in the field of portal hypertension, primary prophylaxis of variceal bleeding and non cirrhotic portal fibrosis has also received international acclaim.

Dr. Sarin has contributed more than 200 original research papers in national and international journals. He has been bestowed with Silver Jubilee Research Award of the MCI; FICCI award for R&D in life sciences; Dr. V.R. Khanolkar, Netaji, Knoll, Parke-Davis, Boots Oration awards, Ranbaxy research science award; Shanti Swaroop Bhatnagar award; Amrut Mody Unihem and D.V. Dutta Memorial awards of ICMR.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

डॉ. टी. रामचन्द्र राव पुरस्कार

2004

प्रशस्ति

डॉ. ए.एन. श्रीराम



इस पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1985 में एक कीटविज्ञानी एवं मलेरिया विद् तथा पुणे स्थित राष्ट्रीय विज्ञान संस्थान के पूर्व निदेशक स्वर्गीय डॉ. टी. रामचन्द्र राव के बच्चों ने की थी। यह पुरस्कार किसी युवा वैज्ञानिक को आयुर्विज्ञानी कीटविज्ञान के क्षेत्र में उसके शोध योगदानों के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2004 का यह पुरस्कार अण्डमान एवं निकोबार द्वीपसमूह के पोर्ट ब्लेयर स्थित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के तकनीकी अधिकारी डॉ. ए.एन. श्रीराम को "अण्डमान एवं निकोबार द्वीपसमूह में वूशेरेरिया बैक्रोफ्टाई की संचरण गतिकी" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ. श्रीराम ने सबसे पहली बार लिटिल अण्डमान द्वीप में रात्रिक आवर्ती डब्ल्यू. बैक्रोफ्टाई के संक्रमण के एक नवीन केन्द्र बिन्दु की पहचान की है। ये परिणाम इस क्षेत्र की एक रोगस्थानिक के रूप में पहचान करने के लिए उपयोगी पाए गए हैं। और इस प्रकार उस क्षेत्र को डार्डइथाइल कार्बामाज़ीन साइट्रेट के नियमित व्यापक औषध प्रयोग के लिए सम्मिलित कर लिया गया है। निकोबार जिले के नानकॉवरी द्वीप समूह में दिनचर अनियतकालिक डब्ल्यू. बैक्रोफ्टाई की व्यापकता का मूल्यांकन किया गया और उसके नियंत्रण की संभावनाओं की तलाश की गई है। रोग की अवधि तथा चिरकारी अभिव्यक्तियों सहित रोगियों के अनुपात के बीच संबंध ज्ञात करने के साथ-साथ संचरण गतिकी पर व्यापक एवं गहन अध्ययन भी किए गए हैं। पूरे वर्ष भर जारी अध्ययन के अन्तर्गत कीटविज्ञानी पैरामीटरों और रोगवाहक के दंशन व्यवहार का अध्ययन किया गया है। डॉ. श्रीराम के शोध कार्य से इस प्रकार के फाइलेरिया रोग के नियंत्रण हेतु उपयुक्त उपायों का सुझाव देने में सहायता मिली है।

डॉ. श्रीराम ने 10 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

DR. T. RAMACHANDRA RAO AWARD

2004

CITATION

DR. A. N. SHRIRAM



This award was instituted in 1985 by the children of late Dr. T. Ramachandra Rao, an entomologist and malariologist, also former Director of the National Institute of Virology, Pune. It is awarded to a young scientist for his/her research contributions in the field of Medical Entomology.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. A. N. Shiram, Technical Officer, Regional Medical Research Centre, Port Blair, A& N Islands for his work on "Transmission dynamics of *W. bancrofti* in A& N Islands".

Dr. A.N. Shiram has detected a new focus of infection with nocturnally periodic *W. bancrofti* in Little Andaman island for the first time. The findings have been useful for identifying the area as endemic and hence included for routine mass drug administration of Diethyl carbamazine citrate. The prevalence of diurnally sub-periodic *W. bancrofti* in the Nancowry group of islands of the Nicobar district has been assessed and possibilities of its control have been explored. A relationship between duration of disease and proportion of cases with chronic manifestations and extensive and intensive studies on the transmission dynamics have also been carried out. Entomological parameters and biting behaviour of the vector have been investigated as a year round study. Dr. Shiram's research has helped in suggesting appropriate control measures for controlling this form of filariasis.

Dr. Shiram has more than 10 research publications to his credit.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

डॉ विद्या सागर पुरस्कार
2004

प्रशस्ति

डॉ के.एस. जैकब



इस पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1985 में स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, चण्डीगढ़ के मनोरोगविज्ञान विभाग के शिक्षकों द्वारा रोहतक स्थित मेडिकल कॉलेज के मनोरोगविज्ञान के पूर्व आचार्य डॉ विद्या सागर की स्मृति में की गई थी। यह पुरस्कार मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य करने वाले किसी श्रेष्ठ वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2004 का यह पुरस्कार वेल्लोर स्थित क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज के मनोरोगविज्ञान के आचार्य डॉ के.एस. जैकब को “भारत में विखण्डित मनस्कता में संस्कृति व्याख्यात्मक मॉडेल्स और गहन जानकारी” पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ जैकब मानसिक स्वास्थ्य एवं अन्तर्दृष्टि के नृविज्ञानी सापेक्ष महत्व को ज्ञात करने और वेल्लोर की विभिन्न आबादियों में रोग के व्याख्यात्मक मॉडेलों से जुड़े पहलुओं के क्रमबद्ध अध्ययन से संबद्ध रहे हैं। उनका शोध कार्य स्थानीय संस्कृति के साथ मनोविकारी सिद्धान्त के संश्लेषण का प्रयास करने तथा इस संदर्भ पर आधारित मनोविकारी सापेक्ष महत्व को परिवर्तित करने पर जारी है। उनके परिणामों से संकेत मिलता है कि अन्तर्दृष्टि का मूल्यांकन करने के लिए प्रयुक्त वर्तमान बहुआयामी मॉडेल स्वास्थ्य एवं रोग की पश्चिमी धारणाओं पर आधारित है और वे सांस्कृतिक रूप से संवेदी नहीं हैं जिससे अन्तर्दृष्टि के पारिभाष्य, वियपरक अथवा विश्व व्यापक उपायों को प्राप्त करना कठिन हो जाता है। इसलिए, आयामों की व्याख्या में किसी परिवर्तन का समाविष्ट किसी मौलिक परिवर्तन में उसी तरह से होगा जैसे मनोविक्षिप्त लोगों की मानसिक स्थिति की नियमित जांच के दौरान अन्तर्दृष्टि का आकलन किया जाता है और यही मानक विश्व भर में मान्य होना चाहिए। इस प्रकार, उप-सांस्कृतिक धारणाओं के साथ व्यक्तिगत व्याख्या की तुलना करने की आवश्यकता है।

डॉ जैकब को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जर्नलों में 95 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

DR. VIDYA SAGAR AWARD

2004

CITATION

DR. K.S. JACOB



This prize was instituted in 1985 by faculty of the Department of Psychiatry, Post Graduate Institute of Medical Education and Research, Chandigarh, in memory of Dr. Vidya Sagar, former Professor of Psychiatry, Medical College, Rohtak. It is awarded to an eminent scientist for the outstanding contributions made in the field of Mental Health.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. K. S. Jacob, Professor of Psychiatry, Christian Medical College, Vellore for his work on "Culture explanatory models and insight in Schizophrenia in India".

Dr. K.S. Jacob has been working on anthropological perspectives of mental health and insight, systematically studying the issues related to explanatory models of illness in different populations at Vellore. He is continuing his research with the aim of trying to synthesize psychiatric theory with local culture and also change psychiatric perspectives based on the context. His findings suggest that the current multi-dimensional models employed to assess insight are based on western notions of health and illness and are not culturally sensitive making it difficult to have definable, objective or universal measures for insight. Therefore, a change in definition of dimensions would imply a fundamental change in the way insight is assessed during routine mental status examination of people with psychosis and the same standard should be applicable world-wide. Thus, there is a need to compare individual explanation with sub-cultural perceptions.

Dr. Jacob has more than 95 publications in national and international journals to his credit.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

डॉ वाई.एस. नारायण राव व्याख्यान पुरस्कार
2004

प्रशस्ति

डॉ राकेश कुमार जैन



डॉ वाई.एस. नारायण राव व्याख्यान पुरस्कार की संस्थापना वीं 1972 में श्रीमती कमला नारायण राव ने अपने स्वर्गीय पति डॉ वाई.एस. नारायण राव, पूर्व निदेशक, किंग निवारक चिकित्साविज्ञान संस्थान, गिण्डी, चेन्नई की स्मृति में की थी। यह पुरस्कार सूक्ष्मजीवविज्ञान के क्षेत्र में सतत शोध कार्य करने वाले किसी वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है।

वीं 2004 का यह पुरस्कार चण्डीगढ़ स्थित माइक्रोबियल प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिक एफ डॉ राकेश कुमार जैन को "पर्यावरणी सूक्ष्मजीवविज्ञान/पर्यावरणी जैवप्रौद्योगिकी" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ जैन ने जीवरासायनिक और आप्विक स्तरों पर पॉलीन्युक्लियर हाइड्रोकार्बस/नाइट्रोएरोमैटिक यौगिकों के निम्नीकरण पर शोध कार्य किया है। चूंकि, विभिन्न एरोमैटिक हाइड्रोकार्बस के विसंदाण के लिए प्रयुक्त विभिन्न परम्परागत भौतिक रासायनिक विधियां सूक्ष्मजीवविज्ञानी विधियों की तुलना में कम दक्ष और बहुत महंगी हैं, अतः, डॉ जैन ने प्रयोगशाला में अनेक ऐसे सूक्ष्मजीवों को पृथक किया और उनकी विशैता ज्ञात की है जिनमें कार्बन एवं ऊर्जा के एकमात्र स्रोत के रूप में नैफथलीन एवं फेनेथरीन का उपयोग करने की क्षमता है। उन्होंने अनेक एंजाइमी और भौतिक-रासायनिक तकनीकों का प्रयोग करते हुए उनके निम्नीकरण के संपूर्ण भागों की व्याख्या की है। उनके दल ने पाया है कि नैफथलीन निम्नीकरण के लिए सम्पूर्ण मार्ग हेतु जीन एक 65 kb के संचरणशील प्लाज्मिड पर एनकोडेड होते हैं और इन जीनों को एक 25 kb *Eco* RI खण्ड पर क्लोन किया गया है। डॉ जैन माइक्रोबियल टाइप संवर्ध के एकत्रीकरण और जीन बैंक की गतिविधियों से भी सक्रिय रूप से संबद्ध रहे हैं।

डॉ जैन राष्ट्रीय नोवो नॉरडिस्क लाइफ साइंसेज अनुसंधान पुरस्कार, ए एम आई एलेम्बिक पुरस्कार तथा राष्ट्रीय बायोसाइंसेज़ पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं। उन्होंने विभिन्न जर्नलों में 55 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित किया है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH
DR. Y. S. NARAYANA RAO ORATION AWARD
2004

CITATION

DR. RAKESH KUMAR JAIN



Dr. Y. S. Narayana Rao Oration Award was instituted by Smt. Kamala Narayana Rao in 1972, in memory of her husband, late Dr. Y.S. Narayana Rao, former Director of King Institute of Preventive Medicine, Guindy, Chennai. It is given to a scientist for carrying out sustained research work in the field of Microbiology.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. Rakesh Kumar Jain, Scientist F, Institute of Microbial Technology, Chandigarh for his work on "Environmental Microbiology / Environmental Biotechnology".

Dr. Jain has worked on the degradation of polynuclear aromatic hydrocarbons/nitroaromatic compounds at biochemical and molecular levels. Since various conventional physico-chemical methods used for the decontamination of different aromatic hydrocarbons have been shown to be less efficient and very expensive as compared to the microbiological methods, Dr. Jain has isolated and characterized several microorganisms in the laboratory which are capable of utilizing among others, naphthalene and phenanthrene, as the sole source of carbon and energy. He has elucidated the complete pathways of their degradation using several enzymatic and physico-chemical techniques. His group has found that the gene for the whole pathway for naphthalene degradation is encoded on a 65 kb transmissible plasmid and these genes have been cloned on a 25 kb Eco RI fragment. Dr. Jain is also actively involved in the Microbial Type Culture Collection and Gene Bank activities.

Dr. Jain is the recipient of National Novo Nordisk Life Sciences Research Award, AMI-Alembic Award and National Bio Sciences Award. He has more than 55 research publications in various journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद
आई सी एम आर लाला राम चन्द कंधारी पुरस्कार
2004
प्रशस्ति
डॉ संजीव हाण्डा



आई सी एम आर लाला राम चन्द कंधारी पुरस्कार की संस्थापना नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के त्वचाविज्ञान एवं रतिरोग विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. के.सी. कंधारी द्वारा उनके स्वर्गीय पिता की स्मृति में की गई थी। यह पुरस्कार त्वचाविज्ञान और यौन संचारित रोगों के क्षेत्र में अनुसंधान हेतु किसी वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2004 का यह पुरस्कार चण्डीगढ़ स्थित स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के त्वचाविज्ञान विभाग के सह आचार्य डॉ संजीव हाण्डा को “विटिलिगो के प्राकृतिक इतिहास, उपचार एवं सामाजिक प्रभाव” पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ हाण्डा ने वयस्क और बालकालीन दोनों आयु वर्गों में विटिलिगो के अनेक पहलुओं पर कार्य किया है जिनमें इसका जानपदिकरोगविज्ञान, लाक्षणिक विशिष्टताएं, विटिलिगो की चिकित्सा में प्रयुक्त विभिन्न विधियों तथा इस कलंककारी रोग से संबद्ध मनोविकारी रुग्णता संबद्ध हैं। खण्डीय विटिलिगो के स्पैट सबसेट की शीघ्र एवं त्वरित शुष्कात होती है और अखण्डीय प्रकार की तुलना में एक बेहतर पूर्वानुमान, जैसा कि रोग की क्रियाशीलता शीघ्र समाप्त होती है, के साथ संबद्ध है। इसकी शुष्कात अपेक्षाकृत प्रारंभिक आयु में होने, विक्षतियों में बहुलता होने, प्रगामी स्वरूप, पालित्य की घटनाएं अपेक्षाकृत निम्न होने जैसी स्थितियां देखी जाती हैं। विटिलिगो की चिकित्सा में प्रयुक्त दैहिक एवं स्थलीय सभी विधियों में मुखीय विधि से स्टेरॉयड का प्रयोग समान रूप से प्रभावी पाया गया है।

डॉ हाण्डा ने इस अत्यंत कलंककारी रोग के सामाजिक प्रभाव का भी अध्ययन किया है। क्योंकि विटिलिगो की पहचान एक उच्च मनोविकारी रुग्णता और रोग से उत्पन्न दुःक्रिया से संबद्ध है। इसके अतिरिक्त उन्होंने विटिलिगो से संबद्ध मनोविकारी रुग्णता और मनोसामाजिक पहलुओं पर परस्पर-सांस्कृतिक डाटाबेस विकसित करने की आवश्यकता का प्रस्ताव रखा है।

डॉ हाण्डा ने 195 से अधिक शोध पत्रों का प्रकाशन किया है। उन्होंने डॉ पी.एस. रंगनाथन स्मारक पुरस्कार और डॉ विष्णुप्रिया देवी पुरस्कार जैसे विभिन्न पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH
ICMR LALA RAM CHAND KANDHARI AWARD
2004

CITATION

DR. SANJEEV HANDA



The ICMR Lala Ram Chand Kandhari Award was instituted by Prof. K.C. Kandhari, former Head of the Department of Dermatology and Venerology, AIIMS, New Delhi, in memory of his late father. It is an award given to a scientist for research in the field of Dermatology and Sexually Transmitted Diseases.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. Sanjeev Handa, Associate Professor, Department of Dermatology, Post Graduate Institute of Medical Education and Research, Chandigarh for his work on "Natural history, therapy & social impact of vitiligo."

Dr. Sanjeev Handa has worked on several aspects of vitiligo both in adults and in pediatric age group, including its epidemiology, clinical features, efficacy of various therapeutic modalities used for treating vitiligo and psychiatric morbidity associated with this stigmatizing disease. The distinct subset of segmental Vitiligo, has an early and rapid onset and is associated with a better prognosis as disease activity ceases early compared to the non-segmental type. It shows a relatively earlier age of onset, multiplicity of lesions, progressive nature and comparatively lower incidence of poliosis. Of all the systemic and topical modalities, oral steroids are equally efficacious for treating vitiligo. Dr. Handa has also looked into the social impact of this highly stigmatizing disease, since vitiligo is recognized to be associated with a high psychiatric morbidity correlated with dysfunction arising out of illness and proposed the need to develop cross-cultural database on psychosocial aspects and psychiatric morbidity associated with vitiligo.

Dr. Sanjeev Handa has more than 195 research publications to his credit. He has received various awards such as Dr. P. S. Ranganathan Memorial Award and Dr. Bishnupriya Devi Award.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

आई सी एम आर एम.एन. सेन व्याख्यान पुरस्कार

2004

प्रशस्ति

डॉ रोहिणी हाण्डा



आई सी एम आर एम.एन. सेन व्याख्यान पुरस्कार की संस्थापना वीं 1977 में कोलकाता स्थित स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन के चिकित्साविज्ञान के पूर्व आचार्य डॉ के.एन. सेन द्वारा उनके भ्राता श्री एम.एन. सेन की स्मृति में की गई थी। यह पुरस्कार किसी वैज्ञानिक को चिकित्साविज्ञान (चिकित्सीय, प्रयोगशाला अथवा उपचारार्थ) के क्षेत्र में सतत शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वीं 2004 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के चिकित्साविज्ञान विभाग की स्मेटीविज्ञान एवं चिकित्सीय प्रतिरक्षाविज्ञान सेवा के आचार्य डॉ रोहिणी हाण्डा को “भारत में स्मेटी रोगों पर अध्ययन” पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ हाण्डा ने स्मेटीविज्ञान में चिकित्सीय एवं प्रयोगशाला दोनों ही क्षेत्रों में उत्कृष्ट शोध कार्य किया है। उनका दल मैग्नेटिक रेज़ोनेंस स्पेक्ट्रोस्कोपी (एम आर एस) और सिंगल फोटॉन एमिशन कंप्यूटराइज्ड टोमोग्राफी (एस पी ई सी टी) जैसे आधुनिकतम शोध साधनों का उपयोग करते हुए तंत्रिका मनोविकारी सिस्टीमिक ल्युपस एरिथमैटोसिस (एन पी-एस एल ई) में अत्याधुनिक विज्ञान में अग्रणी रहा है। डॉ हाण्डा ने भारत में पैनीकुलाइटाइड्स की चिकित्सीय-विकृतिविज्ञानी प्रोफाइल का भी वर्णन किया है (विश्व के इस भाग में सबसे बड़ी श्रृंखला) और भारत से लाइम संघिशोथ पर प्रथम भविष्य प्रभावी अध्ययन को प्रकाशित किया है। इसके अलावा, डॉ हाण्डा और उनके सहयोगियों ने यकृतशोथ सी वी (एच सी वी) में ऑटोइम्यून चिन्हकों की आवृत्ति एवं गतिकी का अध्ययन किया है। संयोजी ज्ञाक रोगों में टी ए टी ए बंधनकारी प्रोटीन (टी बी पी), p53 और अन्य स्वप्रतिपिण्डों पर उनके शोधकार्य से यह संकेत मिला है कि इन प्रतिजनों की अति अभिव्यक्ति p53 और टी बी पी जीन में अतिसक्रिय नियमनकारी क्षेत्रों की उपस्थिति के कारण हो सकती है।

डॉ हाण्डा अनेक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किए गए हैं जिनमें आई आर ए एवेंटिस व्याख्यान, सर्ले व्याख्यान, लिली पॉलिसी इनीशिएटिव पुरस्कार, डॉ जी.बी. जैन व्याख्यान पुरस्कार, डॉ जे.एन. बेरी पुरस्कार, श्रीमती पी.के. जैन व्याख्यान पुरस्कार और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद का शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार सम्मिलित हैं। उन्होंने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक जर्नलों में 275 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित किया है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

ICMR M. N. SEN ORATION AWARD

2004

CITATION

DR. ROHINI HANDA



The ICMR M. N. Sen Oration Award was instituted in 1977 by Dr. K.N. Sen, former Professor of Medicine, School of Tropical Medicine, Kolkata in memory of his brother Shri M.N. Sen. This award is given to a scientist for the sustained research work carried out in the field of Practice of Medicine (clinical, laboratory or therapeutic).

The award for the year 2004 is being presented to Dr. Rohini Handa, Professor, Rheumatology & Clinical Immunology Service, Department of Medicine, All India Institute of Medical Sciences, New Delhi for his research work on "Studies on rheumatic diseases in India."

Dr. Rohini Handa has excelled both in clinical and laboratory research in Rheumatology. His group has been at the forefront of cutting edge science in Neuropsychiatric Systemic Lupus Erythematosus (NP-SLE) utilizing state of the art research tools like Magnetic Resonance Spectroscopy (MRS) and Single Photon Emission Computerized Tomography (SPECT). Dr. Handa has also described the clinico-pathologic profile of panniculitides in India (the largest series from this part of the world) as well as published the first prospective study on Lyme arthritis from India. In addition to clinical work, Dr. Handa and colleagues have studied the frequency and dynamics of autoimmune markers in Hepatitis C virus (HCV). Their work on TATA binding protein (TBP), p53 and other auto-antibodies in connective tissue diseases proposes that over expression of these antigens might be due to hyperactive regulatory regions in the p53 and TBP gene.

Dr. Rohini Handa is a recipient of many prestigious national and international awards including IRA Aventis Oration, Searle Oration, Lilly Policy Initiative award, Dr. GB Jain Oration, Dr JN Berry award, Smt. PK Jain oration and Shakuntala Amir Chand Prize of ICMR. He has more than 275 publications in reputed national and international scientific journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

नोवार्टिस व्याख्यान पुरस्कार

2004

प्रशस्ति

डॉ ललित कुमार



कैंसर के क्षेत्र में अनुसंधान हेतु नोवार्टिस व्याख्यान पुरस्कार की संस्थापना मूल रूप से वी 1970 में कैंसर अनुसंधान के क्षेत्र में मेसर्स सैण्डोज़ इंडिया लिमिटेड द्वारा की गई थी और वी 1997 में हिन्दुस्तान सीबा-गाइगी लिमिटेड के साथ उसके विलय के उपरांत यह पुरस्कार नोवार्टिस व्याख्यान पुरस्कार के नाम में परिवर्तित कर दिया गया। यह पुरस्कार किसी वैज्ञानिक को कैंसर अनुसंधान के क्षेत्र में कैंसर के नियंत्रण, निवारण और उपचार के लिए मान्य उनके योगदानों के लिए प्रदान किया जाता है।

वी 2004 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के इंस्टीट्यूट रोटरी कैंसर हॉस्पिटल के अर्बुदविज्ञान विभाग के आचार्य डॉ ललित कुमार को “अस्थि मज्जा/मूल कोशिका प्रतिरोपण” पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ कुमार ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में एक सतत तथा मूल्य प्रभावी एलोजेनिक एवं ऑटोलॉगस अस्थि मज्जा/रक्त मूल कोशिका प्रतिरोपण कार्यक्रम विकसित किया है। उन्होंने विगत 10 वीं में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के परिणामों के साथ 250 प्रतिरोपण पूर्ण किए हैं। इस क्षेत्र में डॉ कुमार के अन्य योगदानों में ऑटोलॉगस मूल कोशिका के प्रतिरोपण से पूर्व उसके हिमीकरण के लिए आवश्यक क्रायोप्रीज़र्वेशन सुविधाओं, वी एन टी आर अथवा एस टी आर का प्रयोग करते हुए आण्विक अध्ययनों द्वारा एलोजेनिक प्रतिरोप के पश्चात दाता कोशिकाओं के रोपण की निगरानी हेतु काइमेरिज्म तथा हृद्पेशी, नेत्रीय विकारों, आदि के सुधार हेतु ऑटोलॉगस अस्थि मज्जा मूल कोशिकाओं के नवीन प्रयोगों के लिए एक सहयोगी कार्यक्रम का विकास सम्मिलित है।

डॉ कुमार ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जर्नलों में 190 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित किया है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

NOVARTIS ORATION AWARD

2004

CITATION

DR. LALIT KUMAR



The Novartis Oration Award for research in the field of Cancer was originally instituted in 1970 by M/s Sandoz India Limited in the field of Cancer Research and renamed as Novartis Oration Award after the merger of Sandoz India Ltd with Hindustan Ciba-Geigy Ltd in 1997. This prize is conferred upon a scientist for his/her contributions in the field of cancer research recognized for the control, prevention and cure of cancer.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. Lalit Kumar, Professor, Department of Oncology, Institute Rotary Cancer Hospital, All India Institute of Medical Sciences, New Delhi for his research work on "Bone Marrow / Stem cell transplantation".

Dr. Lalit Kumar has developed a sustained and cost effective allogeneic and autologous bone marrow/blood stem cell transplantation programme at AIIMS and has completed 250 transplants in the past 10 years and with results comparable to international standards. The other contributions of Dr. Lalit Kumar in this field include the development of cryopreservation facilities required for freezing of stem cells prior to autologous stem cell transplantation, chimerism to monitor engraftment of donor cells after allogeneic transplant by molecular studies using VNTR or STR and a collaborative programme for the novel applications of autologous bone marrow stem cells for the repair of myocardium, ocular disorders etc.

Dr. Kumar has more than 190 research publications in national and international journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

प्रो. बी. के. ऐकत व्याख्यान पुरस्कार

2004

प्रशस्ति

डॉ पूनम सलोत्रा



इस पुरस्कार की संस्थापना वीं 1984 में डॉ मीरा ऐकत द्वारा उनके पति प्रो. बी.के. ऐकत, एक जैवआयुर्विज्ञानी वैज्ञानिक की स्मृति में की गई थी। यह पुरस्कार किसी वैज्ञानिक को उँणकटिबंधीय रोगों के क्षेत्र में शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है। जिससे इस क्षेत्र के मौजूदा ज्ञान में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई हो।

वीं 2004 का यह पुरस्कार भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के नई दिल्ली स्थित विकृतिविज्ञान संस्थान की आप्विक जैविकी प्रयोगशाला में कार्यरत उपनिदेशक डॉ पूनम सलोत्रा को “कालाज़ार के उग्रता संबद्ध जीनों की मैपिंग और चिकित्साशास्त्र” पर उनके कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ सलोत्रा के कार्य के परिणामस्वरूप लीशमानिया में एक वृद्धि नियंत्रित जीन सेंट्रिन की पहचान हुई है और उसकी विशैता ज्ञात की गई है। एक विशिष्ट फीनोटाइप सहित सेंट्रिन डबल नॉक आउट उत्परिवर्तियों में एक तनूकृत संभावित वैक्सीन की संभाव्यता होती है। एक नवीन एमास्टीगोट विशिष्ट ए1 की भी पहचान के साथ उसकी विशैता ज्ञात की गई है और इसके ट्रांसक्रिप्ट्स को संक्रमित अस्थि मज्जा नमूनों में प्रदर्शित किया गया है जिससे रोग के विकृतिजनन में इसकी भूमिका प्रमाणित होती है।

डॉ सलोत्रा ने प्रोमास्टीगोट्स से एमास्टीगोट्स में विभेदन के दौरान कई अवधियों में परजीवियों में जीन की अभिव्यक्ति की तुलना की है। जीनोमिक माइक्रोएरे का प्रयोग करते हुए सोडियम एंटीमनी ग्लूकोनेट संवेदी और प्रतिरोधी कालाज़ार आइसोलेट में जीन अभिव्यक्ति की प्रोफाइल ज्ञात की गई जिसके परिणामस्वरूप औषध प्रतिरोधी परजीवियों में परजीवी सतह प्रतिजन (पी एस ए-2), न्युक्लियोटाइड ट्रांसपोर्टर (एन टी), टेट्रासाइक्लिन प्रतिरोधी प्रोटीन होमोलॉग (टी आर एच) और प्रोटियोसोम नियमनकारी एटीपेज़ेज़ जैसे कुछ जीनों के नियमन में वृद्धि देखी गई, जिसकी परर्पाँी में परजीवी की उपस्थिति में सहायता करके लीशमानिया के औषध प्रतिरोध में एक भूमिका हो सकती है।

डॉ सलोत्रा को विभिन्न प्रतिष्ठित वैज्ञानिक जर्नलों में 40 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित करने तथा 2 पेटेंट प्राप्त करने का श्रेय प्राप्त है। उन्हें भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार और परजीवीविज्ञान में रजत जयन्ती पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

PROF. B. K. AIKAT ORATION AWARD

2004

CITATION

DR. POONAM SALOTRA



This award was instituted by Dr. Meera Aikat in 1984 in memory of her husband Prof. B.K. Aikat, a biomedical scientist. It is conferred upon a scientist for the research in the field of Tropical Diseases, the work significantly adding to the existing knowledge in the field of tropical diseases.

The award for the year 2004 is being presented to Dr. Poonam Salotra, Deputy Director, Molecular Biology Laboratory, Institute of Pathology (ICMR), Safdarjung Hospital Campus, New Delhi for her work on "Mapping of virulence related genes of Kala-azar and therapeutics".

Dr. Poonam Salotra's work has led to the identification and characterization of a growth regulated gene Centrin in Leishmania. Centrin double knock out mutants with a unique phenotype has a potential as an attenuated vaccine candidate. A novel amastigote specific gene A1 has also been identified and characterized and its transcripts have been demonstrated in infected bone marrow samples, establishing its role in disease pathogenesis. Dr. Salotra has compared the gene expression in parasites at various time points during the course of differentiation of the promastigotes into amastigotes. Gene expression profiling in sodium antimony gluconate sensitive and resistant KA isolates carried out using genomic microarray show the up-regulation of certain genes such as parasite surface antigen (PSA-2), nucleoside transporter (NT), tetracycline resistant protein homologue (TRH) and proteasome regulatory ATPases in drug resistant parasites, which may play a role in drug resistance of Leishmania by helping the parasite to persist in the host.

Dr. Salotra has more than 40 research publications in various journals of scientific repute and has 2 patents to her credit. She has been awarded the Kshanika Oration Award of ICMR and the Silver Jubilee Award in Parasitology.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

प्रो. सुरिन्दर मोहन मारवाह पुरस्कार

2004

प्रशस्ति

प्रो. महेन्द्र कुमार ठाकुर



इस पुरस्कार की संस्थापना वीं 1993 में प्रो. सुरिन्दर मोहन मारवाह द्वारा की गई थी और यह पुरस्कार किसी भारतीय वैज्ञानिक को भारत में सतत अनुसंधान के माध्यम से वयोवृद्ध लोगों की समस्याओं के हल के लिए वयोवृद्धि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदानों के लिए प्रदान किया जाता है।

वीं 2004 का यह पुरस्कार वाराणसी स्थित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राणिविज्ञान विभाग के प्रो. महेन्द्र कुमार ठाकुर को “वयोवृद्धि के जैवआयुर्विज्ञानी पहलुओं” पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

प्रो. ठाकुर का अनुसंधान मुख्यतया अल्झीमर रोग से संबद्ध जीनों की अभिव्यक्ति तथा एक प्रायोगिक मॉडेल में वयोवृद्धि के दौरान स्टेरॉयड हॉर्मोन द्वारा उनके नियमन पर केन्द्रित रहा है। उन्होंने सबसे पहली बार वर्णन किया है कि वयोवृद्ध चूहे के मस्तिष्क में हिस्टोन का एसिटिलीकरण निम्न होता है। जिससे जीनों की अभिव्यक्ति घट जाती है। एस्ट्रोजन रिसेप्टर ER- α और ER- β की अभिव्यक्ति विभेदक रूप से आयु, लिंग और मस्तिष्क में जनन ग्रंथि के स्टेरॉयड से प्रभावित होती है। प्रो. ठाकुर के अध्ययन से प्राप्त परिणामों से मस्तिष्क की वयोवृद्धि और अल्झीमर रोग के दौरान जीन की अभिव्यक्ति में होने वाले परिवर्तनों, तथा इस प्रक्रिया में स्टेरॉयड हॉर्मोन की भूमिका पर गहन जानकारी प्राप्त होती है।

प्रो. ठाकुर युवा वैज्ञानिकों के लिए इंडियन नेशनल साइंस एकेडमी मेडल से सम्मानित हैं। उन्होंने 75 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित किया है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH
PROF. SURINDAR MOHAN MARWAH AWARD
2004

CITATION

PROF. MAHENDRA KUMAR THAKUR



The award was instituted in 1993 by Prof. Surindar Mohan Marwah and is given to an Indian scientist for significant contributions in the field of Geriatrics, through sustained research in India on the problems of the aged.

The award for the year 2004 is being presented to Prof. Mahendra Kumar Thakur, Department of Zoology, Banaras Hindu University, Varanasi for his work on "Biomedical aspects of ageing".

The research focus of Prof. M.K. Thakur has mainly been on the expression of genes involved in Alzheimer's Disease (AD) and their regulation by steroid hormones during ageing in an experimental model. He is the first to report that acetylation of histone is lower in old rat brain, which reduces expression of genes. The expression of estrogen receptor ER- α and ER- β is differentially influenced by age, sex and gonadal steroids in the brain. The findings of Prof. Thakur provide an insight into the changes that occur in gene expression during brain ageing and Alzheimer's disease and the role of steroid hormones in this process.

Dr. Thakur is a recipient of INSA medal for young scientists. He has published more than 75 research papers.